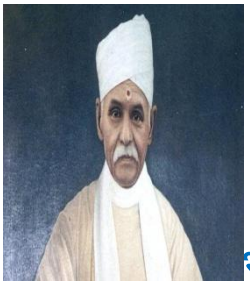

भारत के दूसरे मदनमोहन मालवीय हैं :

प्रो. अच्युत सामंत

–अशोक पाण्डेय

ओडिशा के कटक जिले के कलराबंक नामक गांव में 20जनवरी,1965 में एक करिश्माई बालक ;अच्युत सामंत का जन्म हुआ।मात्र चार साल की उम्र में बालक के पिता का असामयिक निधन एक रेल दुर्घना में हो गया। घर में विधवा मां,तीन बहनें और तीन भाइयों को उन दिनों घोर आर्थिक संकट से गुजरना पड़ा।अपने बाल्यकाल में अनाथ बालक अच्युत सामंत ने अपनी मां के कठोर अनुशासन में पल–बढ़कर एक अनुशासित,संस्कारी,सरल,मृदुल,हंसमुख और परोपकारी बनकर उच्च शिक्षा प्राप्त की । मात्र पांच हजार रुपये की अपनी जमा पूंजी से कीट–कीस की स्थापना 1992–93 ई.में की। आज कीट–कीस कुल लगभग 500 एकड़ भू–भाग में अवस्थित कुल 23 अत्याधुनिक शैक्षिक परिसरों वाला शैक्षिक संस्थान विश्व आकर्षण का केन्द्र बन चुका है।आज डा अच्युत सामंत द्वारा स्थापित कीट–कीस दो विश्व विख्यात विश्वविद्यालय बन चुके हैं। कीट तकनीकी विश्वविश्वविद्यालय में आज देश–विदेश के कुल लगभग 27हजार युवा–युवती उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं वहीं कीस विश्व के प्रथम आदिवासी आवासीय विश्वविद्यालय बन चुका है जहां पर आज कुल लगभग 27हजार अनाथ,बेसहारे,समाज से उपेक्षित आदिवासी बालक–बालिकाएं निःशुल्क समस्त अत्याधुनिक शैक्षणिक सह आवासीय संसाधनों का उपभोग करते हुए अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर रहे हैं। स्वयं स्वावलंबी बनते हैं और दूसरों को भी स्वावलंबी बनाते हैं। कीट–कीस दोनों विश्वविद्यालय विश्व आकर्षण का आज यथार्थ केन्द्र बन चुका है। आज विश्व अनुसंधानकर्ताओं के अनुसंधान का विषय बन चुके हैं संस्थापक डा अच्युत सामंत और उनकी शैक्षिक संस्थाएं, कीट–कीस। विश्व के सबसे बड़े दरिद्रनारायण सेवा केन्द्र के रुप में ,भारत के वास्तविक दूसरे शांति निकेतन के रुप में,विश्व के एकमात्र वास्तविक तीर्थस्थल के रुप में और भारत के

दूसरे मदनमोहन मालवीय मानकर कीट–कीस के संस्थापक डा अच्युत सामंत से मिलने के लिए भारत समेत पूरे विश्व से महान शिक्षाविद्,नोबेल पुरस्कार विजेता,वैज्ञानिक,न्यायवेत्ता,राजनेता,समाजसेवी,फिल्मी सितारे ,खिलाड़ी और कारपोरेट जगत के भामाशाह आदि ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर आते हैं और डा सामंत द्वारा स्थापित कीट–कीस के अवलोकन के उपरांत डा सामंत से मिलकर उन्हें विश्व का आलोक पुरुष बताते हैं। कीट–कीस के संस्थापक डा अच्युत सामंत आज बीजू जनतादल से राज्यसभा के सांसद हैं। उनकी तमाम असाधारण उपलब्धियों का श्रेय उनको स्वयं जाता है जबकि आध्यात्मिक जीवन जीनेवाले डा सामंत इसका श्रेय महाप्रभु जगन्नाथ और पवनपुत्र हनुमानजी के दिव्य आशीर्वाद के साथ–साथ अपने पुरुषार्थ को देते हैं। वहीं स्वर्गीय मदनमोहन मालवीय ने 4फरवरी,1916,वसंत पंचमी के दिन बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय;बी एच यू की स्थापना कर उन दिनों आलोक पुरुष बन गये।सच तो यह भी है कि स्वर्गीय मालवीयजी बी एच यू के मात्र संस्थापक रहे,विश्वविद्यालय की स्थापना में समस्त आवश्यक संसाधन महाराजा दरभंगा रामेश्वर सिंहजी का रहा।कुल 1300 एकड़ भूमि में स्थापित बीएचयू को उन दिनों काशी नरेश ने दान में दिया था। यही नहीं उन दिनों हैदराबाद के 7वें निजाम मीर उस्मान अली ने 1951 में बीएचयू को 10लाख रुपये का दान दिया था। परिसर में बाबा विश्वनाथ का एक विशाल मंदिर है। सर सुंदरलाल चिकित्सालय आदि हैं। वहीं कीट–कीस परिसर में सर्वधर्म समन्वय को विकसित करने के लिए जगन्नाथ मंदिर से लेकर सबकुछ है। दोनों विश्वविद्यालयों में होली,दीवाली,दशहरा,ईद,पोंगल,लोहड़ी,क्रिसमस आदि समय–समय पर आयोजित होते हैं। संस्थापक डा अच्युत सामंत को उनकी निःस्वार्थ समाजसेवा के लिए कुल 40 से भी अधिक मानद डाक्टरेट की डिग्री से सम्मानित किया जा चुका है और लगभग 100 से भी अधिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है। जिस प्रकार स्वर्गीय मदनमोहन मालवीय जी एक संत,महात्मा,शिक्षाविद्,राजनेता और समाजसुधारक रहे ठीक उसी प्रकार बहुत ही कम उम्र में डा अच्युत सामंत भी एक महान शिक्षाविद्,निःस्वार्थसमाजसेवी,परोपकारी और सच्चे अर्थों में एक संवेदनशील महामानव बन चुके हैं।ऐसे में कीट–कीस दो विश्वविख्यात विश्वविद्यालयों के संस्थापक डा अच्युत सामंत को **भारत के दूसरे मदनमोहन मालवीय के रुप में आंकना मेरी समझ से** पूरी तरह से उचित है।–अशोक पाण्डेय